इकाई 16 स्थापत्य के उपयोग आधारित प्रकार

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देष्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 आवासीय

16.3 धार्मिक

16.4 आनुष्ठानिक

16.5 सामरिक

16.6 सार्वजनिक उपयोग

16.7 सारांश

16.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

स्थापत्य का संबंध मूलतः भवन निर्माण से है। भवनों का निर्माण किसी खास उद्देष्य से किया जाता है। इस इकाई में हम प्राचीन काल से बनते आ रहे स्मारकों के व्यावहारिक उपयोग को समझन की कोषिष करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

– विभिन्न कालों में बने स्मारकों की व्यावहारिक उपयोगिता को समझ सकेंगे;

– अपने समाज के लिए इन स्मारकों की प्रासंगिकता को रेचखांकित कर सकेंगे, और

– क्षेत्र विषेष में एक प्रकार के स्थापत्य के महत्व को जान सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

स्थापत्य भवन निर्माण के लिए कला और विज्ञान दोनों हैं। विज्ञान के रूप में यह भवनों की नींच तथा छतों के निर्माण की विविध प्रविधियों तथा तकनीकों को विकसित करती है। यह वह विज्ञान है जो स्थापत्य में विस्तार और आकार का निर्धारण करता है। स्थापत्य का स्वरूप उपलब्ध निर्माण सामग्री पर भी निर्भर करता है क्योंकि इमारत की मजबूती और लागत इसी पर आधारित होती है। इसके साथ–साथ स्थापत्य एक कला भी है। भवन निर्माण क्षेत्र विषेष के सौन्दर्य से भी प्रभावित होता है।

किसी भी स्थापत्यगत निर्माण में उसकी उपयोगिता का अवष्य ध्यान रखा जाता है। इसी से उस भवन का स्वरूप प्रभावित होता है। इसके साथ–साथ भवन निर्माण के लक्ष्य के आधार पर उसकी उपयोगिता निर्धारित होती है। भवन की उपयोगिता के अनुसार उसकी षैली भी निर्धारित होती है। पिछली दो इकाईयों में हमने स्थापत्यगत गतिविधियों की कला और विज्ञान पर विचार–विमर्ष किया है। इस इकाई में हम इसकी उपयोगिता को आधार बनाने हुए स्थापत्यगत गतिविधियों को समझने का प्रयास करेंगे।

किसी खास इमारत पर विचार–विमर्ष करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि इसे इसकी उपयोगिता के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है क्योंकि एक ही इमारत कई भूमिकाएं निभाती है। इस इकाई में स्थापत्यगत गतिविधियों को हमने पांच भागों में विभक्त किया है :

1) आवासीय

2) धार्मिक

3) आनुष्ठानिक

4) सामरिक

5) सार्वजनिक उपयोग

16.2 आवासीय

प्राचीन काल के षहरों में भवन निर्माण सामग्री के रूप में नष्ट होने वाली सामग्रियों के साथ–साथ कभी न नष्ट होने वाली सामग्रियों का भी उपयोग किया जाता था। प्राचीन काल के आवासीय स्थापत्य के बहुत कम उदाहरण मिलते हैं। परन्तु मध्यकाल के दौरान बनी इमारतों का उल्लेख ग्रंथों में मिलता है।

हमारे पूर्वज, षिकारी और संगेहकर्ता गुफाओं में रहा करते थे। जहां तक आवासीय स्थापत्य का संबंध है, भारत में सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता के दौरान इसके प्रमाण मिलते हैं।

हड़प्पा, मोहनजोदड़ों और कलिबंगा की बस्तियों में योजना की एकरूपता मिलती है। ये षहरी गढ़ी और निचली बस्ती में विभाजित थे। बस्ती के पष्चिमी और गढ़ी बनी हुई थी और पूर्वी किनारे पर निचली बस्ती बसी हुई थी। षहर का आम नागरिक निचले षहर में घर बनाकर रहा करता था। यहां भी घरों के आकार में विभिन्नता पाई जाती है। एक कनमे का मकान गुलामों के रहने के लिए बनाया जाता होगा। कुछ घर ऐसे भी मिले हैं जिनमें आंगन और बारह कमरे हैं। बड़े घरों में निजी कुएं और षौचालय भी बने हुए हैं। इन सभी घरों की योजना एक जैसी थी–एक चौकोर आंगन के चारों ओर कमरे बने होते थे। घरों का प्रवेष द्वार पतली गलियों में खुलता था जो सड़कों से जाकर समकोण पर मिलती थी। सड़क की ओर कोई भी खिड़की नहीं खुलती थी। सड़क की ओर घर की दीवारें हुआ करती थीं।

हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद आवासीय इमारतों के अवषेष नहीं मिलते हैं। इसके बाद वस्तुतः 13वीं षताब्दी में बनी इमारतें ही प्राप्त हुई हैं। इनमें भी मुख्य रूप से राजाओं और उनके सामंतों के महल प्राप्त हुए हैं।

राजपूतों के विषाल महल स्थापत्य के सुन्दर नमूने हैं। इनके महलों में प्रतिरक्षा की पूरी व्यवस्था हुआ करती थी। षाही दरबार के लम्बे समय से जुड़े होने, एक दूसरे से प्रतिद्वंद्विता रखने और फिजूलखर्ची की आदत के फलस्वरूप राजपूत राजाओं ने भव्य राजमहल बनवाए।

राजाओं के महलों के अलावा समृद्व लोगों ने हवेलियां भी बनवाई जिनमें लकड़ी का उत्कृष्ट और कलात्मक उपयोग किया गया। यह बहुत कुछ प्रासादों की प्रतिच्छवि प्रतीत होते हैं। जयपुर, ग्वालियन का लष्करी बाजार, आदि राजपूतों के समृद्व षहर थे परंतु जैसलमेर का भवन निर्माण अपने आप में अनूठा और अलग है।

जैसलमेर के महल के अवषेषों में निचली मंजिल पर भारी भरकम दरवाजा, ऊपर बालकनियां, ताखें और पत्थर की जालियां हैं। जाली का काम यहां के स्थापत्य की प्रमुख विषेषता रही है। इसका निर्माण सुनहरे रंग में रंगे बहुआ पत्थर से किया जाता था जिसके ऊपर जानवरों या कमल दल की आकृतियां बनी होती थीं। परम्परागत हिन्दू षैली की तरह बलुआ पत्थर के साथ–साथ षहतीर और कड़ी के रूप में लकडी का भी प्रयोग किया जाता रहा होगा।

शनैः षनैः घरों की मंजिलें बढ़ने लगीं और उसके साथ–साथ बालकनियों, गैलरियों, बंगलादारों, छतरीनुमा मेहराबों और फूल–पत्तियों से बनी दीवारों का प्रचलन बढ़ने लगा।

बोध प्रश्न 1

1) स्थापत्य की उपयोगिता आधारित श्रेणियों की सूची बनाइए।

_____

_____

2) आवासीय स्थापत्य के बारे में पांच पंक्तियां लिखिए।

_____

_____

16.3 धार्मिक

भारतीय समाज में धार्मिक इमारतों की उपयोगिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका रही है। धार्मिक गतिविधियां साजाजिक जन–कल्याण से भी जुड़ी होती हैं। संभवतः इसी कारण भारतीय सभ्यता के आरंभी में ही धार्मिक इमारतों का अस्तित्व मिलता रहा है। इस भाग में हम भारत में धार्मिक स्थापत्य के विकास के प्रमुख चरणों को पहचानने की कोषिष करेंगे।

सिंधु सभ्यता के हड़प्पा षहर में सबसे पुरानी धार्मिक इमारत होने के प्रमाण मिलते हैं। हड़प्पा सभ्यता की खोज पुरातात्विक अवषेषों के जरिए ही संभव हुई है। इन अवषेषों में मोहनजोदड़ो में निर्मित पवित्र स्थानागार प्रमुख हैं। ईंटों से बना यह ढांचा 12 मी. लम्बा, 7 मी. चौड़ा और लगभग 3 मी. गहरा है। इसमें प्रवेष करने के लिए चारों ओर सीढ़ियां बनी हुई हैं। इस स्थानागार की सतह को चूने (bitumen) के उपयोग से ऐसा बनाया गया है कि पानी रिस न सके। इसकी बगल में बने हुए कुएं से इसमें पानी भरा जाता था। पानी निकालने के लिए भी नालियां बनी हुई थीं। इसके चारों ओर मंडप और कई कमरे बने हुए थे। आमतौर पर विद्वानों का यह मानना है कि यहां राजाओं और पुरोहितों के आनुष्ठानिक स्थान सम्पन्न हुआ करते होंगे। यह षहरी जीवन के अनुष्ठान का एक हिस्सा रहा होगा। यह कोई साधारण स्नानागार नहीं होगा बल्कि अनुष्ठानों के द्वारा इसे पवित्रता और गरिमा प्रदान की गई होगी।

पूर्व गुप्त काल की स्थापत्यगत तथा मूर्तिगत सभी प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्तियों के केन्द्र में बौद्ध धर्म था। धनी व्यापारियों, श्रेणियों और षाही अनुदानों की सहायत से इनका निर्माण संभव हो पाया था। इस युग में बने स्तूपों के अवषेष आज भी उपस्थित हैं। पूर्व बुद्ध काल में भी दफनाए गए व्यक्तियों के स्थान पर टीले (mounds) बनाने की परम्परा मौजूद थी। स्तूप उसी का विकसित रूप है। स्तूप एक वृत्ताकार गुंबद या टीला है जो महात्मा बुद्ध, बौद्धभिक्षु, संत या किसी धार्मिक ग्रंथ के पवित्र अवषेषों के ऊपर बनाया गया है। यह पवित्र अवषेष आमतौर पर एक मंजूषा में रखा होता था। यह मंजूषा स्तूप के ठीक बीच में बने छोटे कक्ष में स्थापित की जाती थी। स्तूप के चारों ओर प्रदक्षिणापथ होते थे। स्तूप की चारों दिषाओं में प्रवेष द्वार होता था जहां षिल्पी को अपनी कला का नमूना दिखाने का अवसर प्राप्त होता था।

अपने व्यावहारिक रूप में स्तूप एक ऐसा स्थल था जहां बौद्ध धर्म के श्रद्धालु जमा होते थे और उसके सिद्धान्तों पर विचार करते थे। जैसा कि इकाई 14 में बताया जा चुका है इन स्तूपों का निर्माण व्यक्तिगत या षाही अनुदानों से होता था। जिससे स्पष्ट होता है कि लोग धार्मिक गतिविधियों में निवेष किया करते थे। इस प्रकार के स्मारकों के निर्माण और बाद में रख–रखाव के लिए आसपास की भूमि

या गांव अनुदान में दे दिये जाते थे। इस प्रकार के स्मारक स्थानीय स्वषासित संस्थाओं के रूप में कार्य करते थे। इससे पता चलता है कि इन स्मारकों की धार्मिक के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक भूमिका भी थी।

धार्मिक स्थापत्य के बारे में चर्चा करते समय यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह किसी ईष्वरीय अनदेखी, अनबूझी पवित्र सत्ता का प्रतीक होता है। अतः मंदिर देवी–देवताओं का घर भी है, पूजा स्थल भी है और पवित्रता का प्रतीक भी है। ईसाई कैथेड्रल और बौद्ध चैत्यों की तरह हिन्दू मंदिरों का निर्माण सामूहिक पूजा स्थल के रूप में कभी नहीं किया गया। ग्रीक पूजा स्थलों की तरह भारतीय मंदिर भी भक्ति का प्रतीक और ईष्वर का निवास स्थान रहे हैं।

मंदिर कई प्रकार की उपयोगी भूमिकाएं निभाते रहे हैं। मंदिर का मूर्त प्रतीक रहा है। आम आदमी चाहे वह षैव हो या वैष्णव अपने को मंदिर के जरिए ही धर्म से जोड़ता रहा है। मंदिर जातीय अंतर स्थापित करते रहे हैं। मंदिरों के बैंक और खजाने के रूप में काम करने का उल्लेख भी मिलता है जहां आम आदमी अपना धन सुरक्षित रखवा सकता था। महमूद गजनी ने सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर पर उसकी समृद्धि के कारण ही हमला किया था।

इस्लाम धर्म के अनुयायियों के लिए मस्ज्दि प्रमुख धार्मिक स्थल है। इस्लाम एक ऐसा धर्म है जहां मुस्लिम समुदाय के लोगों का कम से कम सप्ताह में एक बार आपस में मिलने का निर्देष दिया गया है। प्रत्येक षुक्रवार को इस्लाम धर्म के अनुयायी मस्जिद में नमाज पढ़न के लिए एकत्रित होत हैं। इस प्रकार मस्जिद इस्लाम धर्म के अनुयायियों के लिए मिलने–जुलने का स्थल भी है।

इस्लाम में राजनीति और धर्म एक दूसरे से घुले–मिले हैं। अतः मस्जिद एक राजनैतिक भूमिका भी निभाती है। मस्जिदों से खुतबा जारी करने की प्रथा भी है। इसके जरिए नमाज के दौरान हर षुक्रवार को मौलवी राजा के नाम से खुतबा जारी करता था। इसका मुख्य उद्देष्य राजा के नाम को दूर–दूर तक प्रसारित करना था। खुतबे की एक धार्मिक गरिमा थी क्योंकि इस मौलवी मस्जिद में बैठकर पढ़ता था। संचार की धीमी प्रक्रिया के काल में यह सूचना और प्रसारण की उत्तम विधि थी।

भारत की प्रमुख धार्मिक इमारतों में चर्च का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसका निर्माण सुसंगठित संस्था द्वारा किया जाता था। कैथोलिकों के लिए रोम साम्राज्य और प्रोटेस्टेन्ट के लिए प्रोटेस्टेन्ट चर्च सुसंठित संस्थाएं थी। भारत में सबसे पहले गोवा में चर्च बनाया गया। इसके बाद देष के लगभग सभी हिस्सों में चर्चों का निर्माण हुआ।

16.4 आनुष्ठानिक

एक रोचक तथ्य यह है कि भारत में बनने वाले आनुष्ठानिक स्थापत्य में मकबरों और मजारों की बहुलता है। इसलिए यहां हम थोड़े विस्तार के मकबरे और मजार स्थापत्य की चर्चा करने जा रहे हैं। मकबरा आनुष्ठानिक होने के साथ–साथ धार्मिक स्थापत्य की श्रेणी में भी आता है। राजधानी होने के कारण दिल्ली और उसके आसपास अनेक मकबरे बनाए गए हैं। इनमें से कुछ मकबरे स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इन्हें षैली के पथ प्रदर्षक के रूप में में माना जा सकता है। इन मकबरों का निर्माण दो प्रकार से हुआ जिनकी चर्चा नीचे की जा रही है :

क) अष्टकोणीय योजना पर आधारित मजारों की डिजाइनों में निम्नलिखित विषेषताएं होती थी :

– मुख्य मकबरे के कक्ष के चारों ओर एक बरामदा बनाया जाता था।

– इसे एक मंजिल ऊंचा बनाया जाता था।

– बरामदों में छज्जे लगे होते थे जिन्हें खम्भों से सहारा दिया जाता था।

ख) दूसरे प्रकार की इमारत की योजना चौकोर होती थी। इनकी निम्नलिखित विषेषताएं थीं:

– मुख्य मकबरा कक्ष के चारों ओर बरामदे की अनुपस्थिति।

– बाहरी हिस्से में दो या कभी–कभी तीन मंजिलों का निर्माण।

– छज्जों और उन्हें सहारा देने वाले खम्भों की अनुपस्थिति।

बाद में मुगल काल के दौरान मकबरे के चारों ओर बाग लगाया जाने लगा जो चारों ओर से घिरा होता था। प्रवेष के लिए दरवाजे बनाए गए। अमूमन मकबरे के स्थल और डिजाइन का चुनाव बादषाह खुद करता था इससे इस प्रकार की इमारतों के व्यावहारिक महत्व का पता चलता है। ऐसा माना जाता था कि इस प्रकार की इमारतों के माध्यम से ही काफी लम्बे समय तक किसी षासक का नाम और उसकी ख्याति जिन्दा रह सकती है। षाहजहां ने अपनी पत्नी मुमताजमहल की याद में ताजमहल का निर्माण करवाया। यह विष्व प्रसिद्ध है।

बाग लगाने की प्रथा का आरंभ काफी पहले हो चुका था। सबसे पहले लोदी बंष के षासकों ने अपने मकबरे के चारों ओर बाग लगवाने षुरू किए थे ताकि मृत्यु के बाद वे षांतिपूर्ण माहौल में आराम कर सकें। यह प्रवृत्ति मुगल काल के दौरान भी जारी रही। अपने आराम और सुख–सुविधा के लिए बाबर ने भी बाग लगवाए। एक चित्र में बाबर को धौलपुर के बागान की योजना का निरीक्षण करते हुए दिखया गया है। आज इस बाग के भगनावषेष ही मौजूद हैं। कहा जाता है कि आगरे के बाग, राम बाग और जोहरा बाग, दोनों ही बाबर ने बनवाए थे। बाबर का प्रपौत्र (जहांगीर) चित्रकला का प्रेमी और संरक्षक था। इस युग के चित्रों में फूलों और जानवरों के प्रति उसके प्रेम को दर्षाया गया है। उसने अपने षासन काल में बड़ी–बड़ी इमारतों के निर्माण में ज्यादा रुचि दिखाई है। काष्मीर के प्रमुख मुगल बाग, षालीमार बाग और निषात बाग, जहांगीर की रुचि के ही प्रतिफलन थे।

16.5 सामरिक

प्राचीन काल से राजा और बादषाह अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए एक दूसरे से लड़ते रहे हैं। युद्ध के प्रति लगाव ने प्रतिरक्षा तकनीकों को जन्म दिया। हड़प्पा संस्कृति में भी आक्रमणकारियों से सुरक्षा के लिए षहरों के चारों ओर दीवारें बनाई जाती थीं। किले बंदी की यह प्रथा लगातार चलती रही हालांकि इसके अवषेष कम मिलते हैं। 13वीं षताब्दी में तुर्कों का आगमन हुआ। तुर्क षासकों के समय से हमें किलों के स्थापत्यगत अवषेष प्राप्त होते हैं।

तुर्कों और मुगल षासकों ने बड़े–बड़े दुर्गों का निर्माण किया। यह पष्चिम में होने वाली गतिविधियों, विषेषकर क्रूसेड्स की पवित्र भूमि पर, को भी प्रतिबिंबित करता है। गढ़ी के स्थान पर बड़े–बड़े किलों का निर्माण अपने आप में पूर्ण है।

गोला–बारूद और तोपखाने के आगमन के बाद 15वीं–16वीं षताब्दी में किलेबंदी में आमूल परिवर्तन आये। पहले दीवारों की ऊंचाई और मोटाई पर बल दिया जाता था परन्तु धीरे–धीरे यह महसूस किया जाने लगा कि निषाना साधने के लिए और तोप से गोलाबारी करने के लिए किले की ऊंचाई कम करनी होगी। ऊंचाई के प्रक्षेपास्त्र फेंकने की बजाय सीधे–सीधे की गई निषानेबाजी पर जोर दिया जाने लगा। आग्नेय अस्त्रों की मारकक्षमता और निषाने में वृद्धि से बुर्ज को आगे बढ़ाना जरूरी हो गया। किले की दीवारों की मोटाई बढाई गई और उन्हें प्लास्टर से मजबूत बनाया गया परन्तु इसके वक्र आकार को कोणीय आकार में बदल दिया गया ताकि इस पर गोलों की मार का असर कम पड़े। भारत के कुछ महत्वपूर्ण किलों के नाम इस प्रकार हैं :

– आगरे का किला

– दिल्ली का किला

– इलाहाबाद का किला

– चितौडगढ़

– कुंम्भलगढ़

– ग्यालियर का किला

बोध प्रश्न – 2

1) मस्जिदों की व्यावहारिक उपयोगिता का विवेचन कीजिए।

_____

_____

2) भारत के मकबरा स्थापत्य पर तीन पंक्तियां लिखिए।

_____

_____

16.6 सार्वजनिक उपयोग

भारतीय इतिहास के आरंभिक काल से ही जनता के कल्याण के लिए सार्वजनिक भवनों का निर्माण किया जाता रहा है। इसके प्राचीनतम अवषेष हड़प्पा संस्कृति के भग्नावषेषों से प्राप्त होते हैं।

सिन्धु घाटी की सभ्यता के सभी षहरों में, चाहे पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा या मोहनजोदड़ो हो या भारत में स्थित लोथल या कालीबंगा, सभी जगह योजना में एक प्रकार की आष्चयर्जनक समानता पाई जाती है। नगरों का निर्माण एक समान योजना के तहल हुआ है। जल और मल निकास व्यवस्था इस नगर योजना की एक महत्वपूर्ण विषेषता है। घरों में बने स्नानागार से निकलने वाला पानी एक नाली द्वारा मुख्य सड़क के किनारे बनी बड़ी नाली में जाता था और वहां से यह पानी सोखने वाले गड्ढों में गिराया जाता था। सड़कों के किनारे बनी नालियां ईंटों या पत्थरों से पूरी तरह ढकी होती थीं। हमें इस व्यवस्था के प्रबंधन की जानकारी नहीं मिली है। परन्तु इतनी कुषल और एकरूप योजना किसी केन्द्रीय सत्ता के अस्तित्व के बिना संभव न थी।

भंडारगृह भी एक महत्वपूर्ण इमारत थी। हालांकि यह खास तौर पर सार्वजनिक इमारत नहीं थी। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में भी भंडारगृह पाए गए हैं। हड़प्पा में गढ़ी की ऊंचाई अपेक्षाकृत कम है। यहां 91 मीटर के भीतर के नदी तल में छह भंडारगृहों की दो कतारें प्राप्त होती हैं। मोहनजोदड़ो के समान प्रत्येक के बीच में 7 मीटर चौड़े रास्ते बने हुए हैं। इन सभी बारह भंडारगृहों का क्षेत्रफल कुल मिलाकर 657 वर्गमीटर है। इस भंडारगृह के दक्षिण में वृत्ताकार चबूतरे बने हुए हैं जिन पर फसलों की पिटाई होती थी। इसके चारों ओर बनी बैरकों में अनाज पीटने वाले श्रमिक रहा करते होंगे। अनाज आये का प्रमुख स्त्रोत था। अतः इनका नियंत्रण और वितरण सरकारी भंडारगृहों में रखा जाता था। राज्य अर्थव्यवस्था में वे आधुनिक राज्य के बैंक की भूमिका निभाते थे। मुद्रा व्यवस्था न होने के कारण उस समय इस प्रकार की व्यवस्था का विषेष महत्व था और यह प्रषासन की कार्य–कुषलता, क्षमता और राष्ट्र की समृद्धि का प्रतीक था।

13वीं षताब्दी में भारत में तुर्कों ने जिन सार्वजनिक भवनों का निर्माण कराया उनमें सराय सबसे प्रमुख हैं। सबसे पहले सरायों का उल्लेख बलबन के काल (लगभग 1266 ई.) में मिलता है। बाद के षासकों में मौहम्मद तुगलक और फिरोज तुगलक दोनों ने दिल्ली में और प्रमुख मार्गों पर कई सरायें बनवाईं। इन सरायों की विषेषता इस प्रकार थी :

– चौकोर या अष्टकोणीय निर्माण योजना, चारों ओर से घिरी पत्थर की दीवारें, और एक या दो प्रवेष द्वार।

– इसके भीतर कई कमरे होते थे जिसके सामने चारों ओर छोटे गुंबदाकार स्थल बनाए जाते थे। इस परिसर में मालगोदाम भी होता था।

– परिसर के अन्दर और खुले आंगन में एक या दो कुएं और एक मस्जिद भी बनाई जाती थी।

ये सराय मूलतः आधुनिक होटल थे जो व्यापार को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों पर बनाए जाते थे। इनकी देखरेख स्थानीय अधिकारी किया करते थे, जिनका काम सराय में जरूरत का समान उपलब्ध कराना और यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करना था। विभिन्न स्त्रोतों के आधार पर यहा कहा जा सकता है कि इन सरायों के उपयोग में धर्म या आस्था के आधार पर कोई मतभेद नहीं किया जाता था।

मध्यकाल में भारत में पत्थर के पुल भी बनाए गए। ये पुल मेहराबों के आकार में बनाए जाते थे और ये खंभों के सहारे टिके होते थे। ये पुल रास्ते में पड़ने वाले छोटे–छोटे नालों या छोटी नदियों पर बनाए जाते थे। पूर्व तुर्क काल के कुछ पुलों में मेहराबों का निर्माण कदलिकाकृत सिद्धांत पर हुआ है। इस युग के अन्य मौजूदा ढांचों में मेहराबों का निर्माण डाट पत्थर और मुख्य पत्थरों से किया गया है। इस युग में मेहराब षैली में पुलों का निर्माण किया जाता था और मजबूत भी होते थे और जिनकी चौड़ाई भी पर्याप्त होती थी। इस पूरे काल में पत्थरों से ही पुल बनाए जाते रहे। 19वीं षताब्दी में जाकर निर्माण सामग्री के रूप में पत्थर के स्थान पर लोहे का उपयोग होने लगा।

रोचक तथ्य यह है कि यह सभी पुल मध्यम या छोटे आकार की नदियों पर बनाए गए थे। इसके अतिरिक्त पतली खाईयों, गड़ढों और नालों पर भी इन्हें निर्मित किया गया था। उत्तर और दक्षिण की बड़ी नदियों क्रमषः गंगा, यमुना और गोदावरी तथा कृष्णा नदियों पर 19वीं षताब्दी के उत्तरार्द्ध के पहले पुल नहीं बनाए जा सके थे।

नीचे कुछ पुलों का उल्लेख किया जा रहा है जिनके अवषेष अभी तक षेष हैं। ये पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र हैं:

1) जौनपुर (उत्तर प्रदेष का एक छोटा षहर) का गोमती पुल : यह पुल अकबर के समय (16वीं षताब्दी के उत्तरार्द्ध) का है।

2) गंभीर पुल, चिर्ताड़गढ़, राजस्थान। यह पुल अलाउद्दीन खलजी के समय (14वीं षताब्दी का पूर्वार्द्ध) का है।

3) 11 वीं षताब्दी के पूर्वार्द्ध में बना अथरनाला पुल, पुरी, उड़ीसा।

बोध प्रश्न –3

1) भंडारगृहों पर पांच पंक्तियां लिखिए।

_____

_____

2) मध्यकालीन सरायों की मुख्य विषेषताएं बताइए।

_____

_____

3) पूर्व तुर्क कालीन और तुर्क कालीन पत्थर के पुलों के बीच क्या अंतर है?

_____

_____

16.7 सारांश

इस इकाई में आपने विविध स्थापत्यगत प्रकारों की जानकारी प्राप्त की। इस इकाई में हमने इमारतों के व्यावहारिक उपयोग को ध्यान में रखा। इसके साथ–साथ आपने स्थापत्य विषेष के प्रतीकात्मक महत्व के बारे में भी जानकारी हासिल की। उस समय जब संचार सुविधाएं काफी कमजारे थीं ये विषाल इमारतें खास संदेष की प्रतिनिधित्व करती थीं। इस इकाई में स्थापत्य का अध्ययन एक विषेष दृष्टि से किया गया है और तत्कालीन समाज से इसके संबंध की चर्चा की गई है।

बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न – 1

1) इसकी पांच श्रेणियां हैं। देखिए भाग 16.1

2) देखिए भाग 16.2

बोध प्रष्न – 2

1) देखिए भाग 16.3

2) देखिए भाग 16.4

बोध प्रश्न – 3

1) देखिए भाग 16.6

2) भाग 16.6 में इसकी तीन प्रमुख विषेषताओं का उल्लेख किया गया है।

3) पूर्व तुर्क कालीन पुलों काा निर्माण कदलिकाकृत सिद्धांत के आधार पर किया जाता था। तुर्क कालीन पुल पूर्णतः मेहराब के सिद्धान्त पर बनाए जाते थे। देखिए भाग 16.6